अयोध्याः 6 दिसंबर 1992

पी. वी. नरसिम्हा रॉय

Ayodhya: 6 December 1992

by P.V. Narsimha Rao

प्रकाशकः पेंगुइन बुक्स, यात्रा बुक्स के सहयोग से

प्रकाशितः जुलाई 2006

भाषाः हिंदी

मुद्रणः पेंगुइन

मूल्यः रु 250.00

आई एस बी एनः 0143099906

ऐडिशनः पेपर बैक

फ़ॉरमेटः बी

पृष्ठः 392pp

वर्गीकरणः कथेतर

क्षेत्र अधिकारः विश्व

- **Published by** Penguin Books India in association with Yatra Books
- **Published:** July 2007
- **Language:** Hindi
- **Imprint:** Penguin
- **Special Price:** Rs.250.00
- **Cover Price:** Rs. 250.00
- **ISBN:** 0143 099906
- **Edition:** Paperback
- **Format:** B
- **Extent:** 392pp
- **Classification:** Biography
- **Rights:** World

योगेंद्र सिंह लोकसभा सचिवालय की संपादन एवं अनुवाद सेवा में अनुवादक के पद पर कार्यरत हैं। आपने अंग्रेज़ी साहित्य में एम.ए.और पत्रकारिता में डिप्लोमा किया है। आप स्वतंत्र रूप से अनुवाद तथा पत्रकारिताके कार्य से भी जुड़े हैं।

'न जाने कितने लोगों ने, जिनमें मित्र भी शामिल थे और विरोधी भी, मुझसे यह सवाल किया, "आपने दिसंबर 1992 को बाबरी मस्जिद को बर्बरता से बचाने के लिए उत्तर प्रदेश में राष्ट्रपति शासन क्यों नहीं लागूकिया?" अवश्य ही इस सवाल को परखना होगा...'

अयोध्या 6 दिसंबर 1992, अयोध्या में जो घटा और जिन कारणों से घटा, उन पर प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव का नज़रिया पेश करती है। 6 दिसंबर, 1992 के इस वाक़ए की तुलना 1990 में मुलायम सिंहसरकार के मुख्यमंत्रित्व काल में बाबरी मस्जिद पर हुए नाकाम हमले से करके राव ने अयोध्या में राममंदिर निर्माण के मुद्दे को राजनीतिक फ़ायदों से जोड़ने के लिए चल रही मुहिम परप्रकाा डाला है। संविधान की धारा 356 पर विस्तार से चर्चा करते हुए श्री राव ने उन कारणों को बताने का प्रयास किया है, जिनके कारण उत्तर प्रदेश में राष्ट्रपति शासन लागू नहीं किया जा सकता था।

यह पुस्तक नब्बे के दशक में लिखी गई थी, जब श्री राव प्रधानमंत्री पद छोड़ चुके थे। उनकी इच्छानुसार इसे उनके मरणोपरांत ही प्रकाशित किया जा रहा है। यह पुस्तक आधुनिक इतिहास की एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण राजनीतिक घटना को समझने की दिशा में एक प्रयास है।

लेखक परिचय

पामुलापरती वेंकट नरसिम्हा राव का जन्म जून, 1921 में हैदराबाद में हुआ था। स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से हिस्सा लेने के बाद वे आंध्र प्रदेश कांग्रेस सरकार में पहले मंत्री बने, और 1971 में मुख्यमंत्री चुने गए। 1973 के चुनाव के बाद वे लोक सभा में आए और उन्होंने इंदिराजी और राजीव गांधी काल में कैबिनेट स्तर के कई पद संभाले। वे भारत सरकार में विदेशमंत्रीऔर गृहमंत्री भी रहे। 1991 में राजीव गांधी की हत्या के बाद राव को कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया और उन्होंने प्रधानमंत्री पदसंभाला। अल्पमत की सरकार होने के बावजूद राव पहले प्रधानमंत्री थे, जिन्होंने गांधी-नेहरू परिवार का न होते हुए भी अपना पांच साल का कार्यकाल पूरा किया। उनके प्रधानमंत्री काल में भारत ने उदारीकरण और मुक्त बाज़ार की ओर क़दम बढ़ाया। 1996 के आम चुनाव मेंकांग्रेस की हार के बाद उन्होंने कांग्रेस के अध्यक्ष पद से इस्तीफ़ा दे दिया। दिसंबर, 2004 में उनका निधन हो गया।